ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे   निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 26 अंकः 52 बुलेटिन अवधिः 8–12 जुलाई, 2017 दिनः शुक्रवार दिनाँकः 07 जुलाई, 2017

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	**मौसम पूर्वानुमान – नैनीताल**				
	08–07–2017	**09–07–2017**	**10–07–2017**	**11–07–2017**	**12–07–2017**
वर्षा (मिमी0)	20	20	25	25	50
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	20	21	21	22	21
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	15	16	14	15	15
बादल आच्छादन	घने बादल	घने बादल	घने बादल	घने बादल	घने बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	95	95	95	95	95
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	65	65	65	65	65
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	006	008	008	008	010
वायु की दिशा	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व

आगामी 8 से 12 जुलाई तक मध्यम से भारी वर्षा होने तथा आसमान में घने बादल छाये रहने की सम्भावना है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (**30 जून** से **6 जुलाई,** 2017 सुबह 8:30 तक) में घने बादल छाये रहे व 114.4 मि0मी0 वर्षा हुई तथा अधिकतम तापमान 18.7 से 21.5 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 10.0 से 15.5 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

❖ रामदाने की फसल में दूसरी गुड़ाई करें तथा निराई के समय पौधों के बीच की दूरी 15 सेमी कर देनी चाहिए।

❖ रामदाने की फसल में पर्णजालक कीट का प्रकोप दिखाई देने पर मिथाइल ओ डेमिटोन या डाई मिथोऐट 1 मिली/लीटर पानी या क्यूनोलफॉस 1.5 मिली/लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करें।

❖ धान में तना वेधक व पत्ति मरोड़क का प्रकोप होने पर क्लोरान्ट्रनिलिप्रोल 0.4 जी को 10000 ग्राम/है0 या फिप्रोनिल 0.3 जीआर 25000 ग्राम/है0 या कारटाप 4 जीआर 18750 ग्राम /है0 की दर से छिड़काव रोपाई से 50 दिन के अन्दर करें।

❖ धान की रोपाई जल्द से जल्द पूर्ण करे।

❖ धान की रोपाई के पूर्व अगर खेत में खरपतवार है तो उन्हे निकाल दें।

❖ धान की रोपाई हेतु 60 किग्रा0 नत्रजन, 60 किग्रा0 फॉस्फोरस, 40 किग्रा0 पोटाश /हैक्टेयर का प्रयोग करे। शेष नत्रजन की मात्रा को 2 भागो मे, कल्ले फूटने की अवस्था एवं बाली निकलने की अवस्था में प्रयोग करे।

❖ खेत में जिंक की कमी 25 किग्रा0 जिंक सल्फेट/हैक्टेयर की दर से लेव के समय खेत में मिला दें।

❖ एक स्थान पर तीन पौधे ही लगाऐ।

❖ मक्का में जहॉ तना बेधक का प्रकोप होता है। बुवाई के समय कार्बोफयूरॉन 3सी0जी0 का 33 किग्रा0/है0 की दर से मृदा मे डालें।

❖ गन्ने में तना बेधक कीट का प्रकोप होने पर सिंचाई के पूर्व या बाद 20–25 कि0ग्राम0/है0 क्लोरपाइरीफास दवा का प्रयोग करें।

उद्यान प्रबन्धः

❖ पर्वतीय क्षेत्रों में असिंचित दशा में मूली, राई, धनियाँ, शलजम एवं पालक की बुवाई करें।

❖ असिंचित मध्यम ऊँचें पर्वतीय क्षेत्रों में अगस्त मध्य में सब्जी मटर की बुवाई हेतु मटर की अगेती किस्मों के बीज की व्यवस्था करें। ध्यान रहें की बीज उपचारित हो।

❖ पर्वतीय क्षेत्रो में टमाटर, बैंगन एवं शिमला मिर्च की फसल में बरसात के दौरान जल निकास की समुचित व्यवस्था रखें तथा समय–समय पर फलों की तुड़ाई करें।

❖ मैदानी क्षेत्रो में टमाटर की नर्सरी डालते समय सड़ी हुई गोबर की खाद/वर्मी कम्पोस्ट में ट्राइकोडर्मा 1 किग्रा/कुन्तल मिलाने के बाद नर्सरी में प्रयोग करें।

❖ मैदानी क्षेत्रो में सब्जियों के बीज को थीरम + कार्बनाडाजीन (2:1) 3ग्राम/किग्रा बीज की दर से उपचारित करने के बाद बुवाई करें।

❖ मैदानी क्षेत्रो में रसायन के स्थान पर जैव नियंत्रक के द्वारा भी 10ग्राम/किग्रा बीज की दर से उपचारित कर बुवाई करें।

❖ मैदानी क्षेत्रो में नर्सरी को कीट अवरोधी जाली से ढक कर रखें।

❖ मैदानी क्षेत्रो में यदि गोभी वर्गीय सब्जियों की पौध तैयार हो गई हो तो इस सप्ताह में पौध प्रतिरोपण करें।

❖ मैदानी क्षेत्रो में बैंगन व टमाटर में फल छेदक कीट नियंत्रण हेतु 15 मिली मैलाथियान रसायन को 10 लीटर पानी में घोलकर दिन के समय छिड़काव करें।

❖ पर्वतीय क्षेत्रो में यदि गर्मियों में पलवार का प्रयोग किया है तो बरसात से पूर्व थालों से हटा दें।

❖ मिर्च एवं टमाटर की पत्तियां काले पड़ने और फसल में ऊपर से डन्ठल काले पड़कर सड़ने की समस्या से निदान हेतु कार्बेन्डाजिम 0.1 प्रतिशत की दर से घोल बनाकर छिड़काव बारिश न होने पर ही करें।

❖ फ्रासबीन एवं लोबिया में फलो पर धब्बे बनने एवं सड़ने पर मैन्कोजेब 2 ग्राम/लीटर या कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम/लीटर का छिड़काव करे।

❖ टमाटर में फल बेधक का प्रकोप होने पर, क्लोरान्ट्रानिलिप्रोले 18.5 एस0सी0, 150 मि0ली0/है0 के छिड़काव के तीन दिन बाद या इन्डोक्साकार्ज 14.5 एस0सी0, 500मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद ही फल का उपयोग करें।

❖ टमाटर की फसल में सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर सायान्ट्रानिलीप्रोले 10.26 ओ0डी0, 900 मि0ली0/है0 या थियामेथोक्जाम 25 डब्लू0एस0जी0, 200 ग्राम/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद ही फल को खाने हेतु प्रयोग करें।

❖ बैंगन में तना एवं फल बेधक के नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस0जी0 200ग्रा0/है0, साइपरमैथ्रिन 25इसी 200मि0ली0/है0, लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 सी0एस0 300मि0ली0/है0 की दर से अन्तिम छिड़काव के पाँच दिन बाद फल का उपयोग करे।

❖ मिर्च में थ्रिप्स के नियंत्रण हेतु लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 इसी 300मि0ली0/है0 या फिप्रोनिल 5 एस0सी0 1लीटर/है0 की दर से छिड़काव के सात दिन बाद ही मिर्च का प्रयोग करें।

- ❖ मिर्च में माइट के नियंत्रण के लिए डाईफेन्थयुरान 50डब्लू0पी0 600ग्रा0/है0या लैम्डासाइहैलोथ्रिन 5 इसी 300मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद फल का प्रयोग करें।
- ❖ कीटनाशी का छिड़काव बारिश न होने पर ही करें।

पशुपालन प्रबन्धः

- ❖ पशुओ को संक्रामक रोग से बचाने हेतु टीकाकरण करवायें।
- ❖ जुलाई एवं अगस्त महीना गाय/भैंसों की ब्याने का समय होता है अतः प्रसव प्रकोष्ठ को साफ–सुथरा करके इस्तेमाल हेतु तैयार रखें।
- ❖ प्रसव के तुरन्त बाद नवजात बच्चे की साफ–सफाई कर उसकी नाभी को धागे से बांधकर किसी साफ चाकू या ब्लेड से काटकर उस पर जैन्सन वायलेट पेन्ट अथवा टिंचर आयोडीन लगाना चाहिए।
- ❖ मानसून के प्रारम्भ में अचानक तेज घूप व तेज वर्षा से पशुओं को बचायें क्योंकि इसकी वजह से त्वचा में जलन जैसा विकार उत्पन्न हो जाता है।
- ❖ इस ऋतुओं में कृमियों का प्रकोप बढ़ जाता है और इससे बचने के लिए कृमिनाशक का उपयोग निकटतम पशु चिकित्सक की सहायता से करें।
- ❖ ज्यादा हरे चारे से घोड़ों में केलिक होने का खतरा रहता है अतः इससे बचें।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विष्वविद्यालय, पन्तनगर